E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
October 2024 Special Issue 14 Volume V (A)

भाषा और साहित्य का सामाजिक सरोकारः विविध आयाम

कार्यकारी संपादक
डॉ.प्रकाश आठवले
हिंदी विभाग प्रमुख
कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, उरुण-इस्लामपुर

अतिथि संपादक
प्रो. डॉ. नितीन शिंदे
प्राचार्य
कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, उरुण-इस्लामपुर

सह - संपादक

प्रा. अश्विनी थोरात
हिंदी विभाग

प्रा. डॉ. जाविद शेख
हिंदी विभाग

कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, उरुण-इस्लामपुर

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli

Akshara Publication

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2024 / Special Issue 14 Volume V (A)

Index

अ.न.	शोधालेख का शीर्षक	आलेख प्रस्तोता	पृ.क्र.
1	हिंदी कविता और सामाजिक सरोकार	डॉ.दिलीपकुमार कसबे	07
2	नासिरा शर्मा की कहानियों में चित्रित मुस्लिम नारी की स्थिति	डॉ.दस्तगीर बा.पठाण	10
3	'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नरों के प्रति सामाजिक सरोकार	प्रो. (डॉ.) भास्कर उमराव भवर	12
4	हिंदी कहानी साहित्य और सामाजिक सरोकार	डॉ.नितीन हिंदुराव कुंभार	15
5	मुक्तिबोध की कविता में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार	डॉ. वर्षाराणी निवृत्तीराव सहदेव	17
6	'शुतुरमुर्ग' नाटक में चित्रित राजनीतिक चेतना	डॉ. हेमलता विजय काटे	20
7	गुलकी बन्नो एक असहाय स्त्री	डॉ. सारिका आप्पा भगत	23
8	आधुनिक हिंदी कविता में सामाजिक सरोकार	डॉ. एन. बी. एकिले	26
9	दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में सामाजिक चेतना	डॉ. शकिला जब्बार मुल्ला	30
10	संत रैदास की हिंदी कविताओं में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार	डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर	33
11	हिंदी उपन्यास साहित्य और सामाजिक सरोकार : मंजुल भगत के उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. वैशाली प्रशांत सामंत	36
12	हिंदी उपन्यास साहित्य और सामाजिक सरोकार	प्रा. अविनाश वसंतराव पाटील	38
13	मोहनदास का व्यक्तित्व निर्माण में संघर्ष	डॉ. विकास विलासराव पाटील	40
14	न्याय की दस्तक देता दलित साहित्य 'ओमप्रकाश वाल्मीकि के विशेष संदर्भ में	डॉ. जयसिंग मारुती कांबले	43
15	विदेशी भारतीयों की समस्याएं एवं सामाजिक सरोकार: 'हर हाल बेगाने' कहानी संग्रह के परिप्रेक्ष में	प्रा.किरण सदानंद भोसले	47
16	भारतीयता की पहचान' निबंध संकलन में चित्रित समाज	प्रा. डॉ अशोक बाळू पाटील	50
17	मनमोहन सहगल के उपन्यासों में नारी सशक्तिकरण	डॉ. सुनीता.रा . हुन्नरगी	53
18	अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक जीवन	डॉ. वृषाली महादेव माळी	57
19	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार	प्रा. मनीषा मंडल	60
20	समकालीन कहानियों में सामाजिक सरोकार का शुक्लपक्ष	सिमरन श्रीवास्तव	62
21	'अपनी जमीं अपना आसमां' आत्मकथा में चित्रित सामाजिक यथार्थ	सारिका शंकरराव धुमाळ	65
22	मोहन दास कहानी में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार	हर्षदा बबन चव्हाण	68
23	डॉ. सादिका नवाब 'सहर' के उपन्यास 'कहानी कोई सुनाओ, मिताशा' में चित्रित सामाजिक सरोकार	सविता महादेव येवले	70
24	हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में अंकित सामाजिक चेतना	श्रीमती.वैशाली महादेव जाधव	73
25	जया जादवानी के कहानी साहित्य में नारी विमर्श	श्रीकांत जयसिंग देसाई	75
26	कृष्णा सोबती के 'समय सरगम' उपन्यास में चित्रित वृद्ध समस्याएँ	श्री.महेश बापुराव चव्हाण	79
27	पुष्यमित्र के 'रेडियोकोसी' उपन्यास में अभिव्यक्त सामाजिक सरोकार	श्री. संतोष शंकर साळुंखे	82
28	मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में चित्रित नारी	शैला प्रल्हाद डुबल	86
29	'रंग दे बसंती' फिल्म में सामाजिक सरोकार	शितल दिपक चौगले	88
30	जयश्री रॉय के 'मोहे रंग दो लाल' कहानी संग्रह में चित्रित सामाजिक समस्या	वैष्णवी संजय शिंदे	91
31	हिंदी उपन्यासों में चित्रित सामाजिक चेतना	डॉ.अमोल तुकाराम पाटील	94
32	गगन गिल की कविताओं में चित्रित नारी संघर्ष'	जयश्री प्रकाश खाड़े	97
33	दूधनाथ सिंह का कहानी साहित्य और सामाजिक सरोकार	श्रीमती. ज्योती एकनाथ गायकवाड	99
34	'लेडीज com. में चित्रित सामाजिक व्यंग्य'	प्रकाश महादेव निकम	102
35	हिंदी उपन्यास और सामाजिक सरोकार	लता अमित मंडोवरा	105

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- EISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / October 2024 / Special Issue 14 Volume V (A)

06

'शुतुरमुर्ग' नाटक में चित्रित राजनीतिक चेतना

डॉ. हेमलता विजय काटे,
हिंदी विभाग,
बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण

भारत में प्रजातंत्र की स्थापना के पश्चात अनेक राजनीतिक दल अस्तित्व में आए हैं। आज राजनीति हमारे जीवन के हर क्षेत्र की प्रभावित करती नजर आती है। कारण राजनीत ही आम आदमी के जीवन को सुधार भी सकती है और आम आदमी के जीवन को मिटा भी सकती है। अर्थात बदलते परिवेश में भी राजनीति को बदल डाला। आज राजनीति का उद्देश सच्ची समाजसेवा न होकर केवल कुर्सी पाना और कुर्सी से चिपके रहना तक ही सीमित हो गया है। इस संदर्भ में डॉ. बापूराव देसाई ने कहा है," आज कुर्सी ही हमारे जीवन का आदर्श मूल्य बन गयी है। कुर्सी पाने और बनाये रखने के लिए किए जानेवाले षडयंत्र , छल, प्रपंच आदि संज्ञा 'राजनीति' बन गई है|"[1] इस बदलते राजनीति ने समाज के हर अंग को प्रभावित किया है, जिसमें साहित्यिक क्षेत्र का भी उल्लेख किया जा सकता है। राजनीति में बढ़ रही अनेक मूल्यहिन प्रवृत्तियों के खिलाफ साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई है। कारण प्रत्येक साहित्यकार अपने समाज से जुडा रहता हैं और एक सामाजिक सरोकार निभाने के दृष्टि से ही साहित्य रचना करता है| जिनमें हम ज्ञानदेव अग्नीहोत्री का भी नाम ले सकते है|

'ज्ञानदेव अग्निहोत्री ' आधुनिक नाटककार के रूप में जाने जाते है। आपके आज तक नौ नाटक प्रकाशित हो चुके हैं - 1) चिराग जल उठा 2) माटी जागी रे 3)नेफा की एक शाम 4) वतन की आबरू 5) अनुष्ठान 6)शुतुरमुर्ग 7) दंगा 8) वो मैं नहीं हूं 9) दामाद हो तो ऐसा (अप्रकाशित)| इनमें 'शुतुरमुर्ग' नाटक राजनीतिक चेतना से प्रेरित है। जिसमें लेखक ने शुतुरमुर्ग पंछी को प्रतिक रूप में अपनाकर आज के वर्तमान नेताओं के अनेक वृतियों पर प्रकाश डाला है। शुतुरमुर्ग एक ऐसा पंछी है. जो खतरे के समय में अपनी चोंच रेत में इसतरह डँस देता है कि जैसे उसे कोई नहीं देख रहा और वह सुरक्षित है। अर्थात संकट के समय में शुतुरमुर्ग केवल अपने बारे में सोचता है, जो उसके स्वार्थी वृत्ति का परिचय देता है| नेताओं में ऐसी ही वृत्ति कई अधिक रूप में मिलती है। इसीकारण 'ज्ञानदेव अग्निहोत्री' ने शुतुरमुर्ग को प्रतिक रूप में अपनाकर नेताओं की अनेक नीतियों पर प्रकाश डाला है। जो एक प्रकार से समाजिक सरोकार ही है|

1) सत्ता लोलुपताः-

आज के वर्तमान नेताओं में सत्तालोलुपता की लालसा अधिकमात्रा में बद गयी है। नेता बनकर जनता की कठिनाइयों को दूर करने की बात तो अब किताबी पत्रों में दर्ज दूर के आदर्शों की बात रह गयी है। "स्वतंत्रता के पश्चात लोगों ने पार्टी बनाना और पार्टी बदलना शुरू किया है। जिसका स्वार्थ जहां जिस दल में सधता है उसी दल में आज का स्वार्थी व्यक्ति सम्मिलित हो जाता है|"[2]

इस बात की ओर शुतुरमुर्ग नाटक में ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने संकेत किया है। शुतुरमुर्ग एक प्रतिकात्मक नाटक है। प्रस्तुत ' नाटक में शुतुरमुर्ग वर्तमान नेताओं का प्रतिक है। शुतुरमुर्ग एक ऐसा पंछी है, जो संकट के समय अपनी सुरक्षा की दृष्टि से विचार करता है| यह वृत्ति समाज में दूर-दूर तक हुई है| इस वृत्ति का फायदा प्रस्तुत नाटक में राजा करता है| वह आपको सचेतन शुतुरमुर्ग समझता है अपने सिंहासन को बचाए रखने के लिए अपने मंत्री गणों को शुतुरमुर्ग की प्रतिमा बनाने में लगा देता है।स्वयं राजा कहता है, " शुतुर्मुर्ग की स्थापना न तो हमारा दर्शन था, न स्वभाव और न धर्म वह तो शक्ति और सत्ता सुरक्षित रखने की एक नीति थी किसी-न-किसी बहाने से हम उन्हें अधिक-से अधिक स्वर्ण मुद्राओं का दान देते रहें, ताकि वे अपने भोग विलास में अधिक-से-अधिक व्यस्त रहें और हमारा सिंहासन सुरक्षित रहें|"[3] प्रस्तुत नाटक के मंत्रीगणों में भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती है| वे राजा से केवल इसीलिए सत्य बोल रहें है ताकि सिंहासन की प्राप्ति आसानी से कर सके| जैसे नाटक के महामंत्री कहते हैं, "हां मैं परम सत्यवादी महामंत्री – इस सिंहासन पर बैठूंगा, क्यों कि सत्य बोलना मेरे जीवन का धर्म नहीं, मेरे कूट नीति का एक अंग है|" [4] इसप्रकार नेताओं में बढ़ती सत्तालालुपता को प्रस्तुत नाटक में चित्रित किया है।

2) दलबदल की प्रवृत्ति :-

कम समय में अधिक अमीर बनने की लालसा ने मनुष्य को अधिक स्वार्थी बना दिया है। वर्तमान नेताओं में यह प्रवृति अधिक मात्रा में दिखाई देती है। सत्तालोलुपता में इसके दर्शन होते ही है। इसके अतिरिक्त अन्य अनके प्रकार के वर्तनों में भी नेता लोग अपने इस प्रवृत्ति का दर्शन देते है। जिसमें हम दल बदलने की वृति का उल्लेख कर सकते है। अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए यह नेता लोग अपनी नीतिमत्ता भूल जाते है| वह कभी किसी एक पक्ष के साथ वचन बद्ध नहीं रहते। जहाँ इनका फायदा छिपा रहता है, वहीं वे तुरंत चले जाते है आज समाज में दलबदलु नेताओं की संख्या बढ़ रही है। नेताओं की इस प्रवृति पर अज्ञेय जी ने सुंदर लिखा है ,

राजनीतिक तो सब कबंध हो गये है और अ चाहे जिस धड पर चाहे जिस रंग की टोपीवाला सिर जड दिया जाता हैं| यह न पुछिए इसके लिए सर बदलने की क्या जरुरत थी. टोपी बदलने से ही काम चल सकता था, जब कि राजनीति है ही टोपी उछाल विद्या का नाम|"[5]

'ज्ञानदेव अग्निहोत्री' ने नेताओं की इस वृत्ति की और भी इशारा किया है। प्रस्तुत नाटक में विरोधीलाल, महामंत्री, भाषणमंत्री इस वृत्ति के नेता है। महामंत्री, भाषणमंत्री इनके इस वृत्ति का परिचय नाटक के अंत में मिलता है। परंतु पूरे नाटक में दलबदल की वृति की ओर ही इशारा किया है। प्रारंभ विरोधीलाल आम जनता का नेता बनकर राजा के पास आता है। परंतु राजा विकासमंत्री पद देते ही तुरंत राजा के पक्ष में चला जाता है। जैसे विराधीलाल कहता है, "मैं विरोधीलाल उर्फ सुबोधीलाल यह स्वीकार करता है कि मेरे पास आत्मा जैसी कोई चीज नहीं है। मैं कुलदेवता शुतुरमुर्ग को साथी करके यह शपथ लेता हूँ कि मैं आधा वचन और आधा कर्म से अर्थात महराज का पूरा अनुयायी रहूंगा|"[6] विरोधीलाल की तरह मामूलीराम भी राजा की बातों में आकर प्रथम दल बदलने का सोचता है। नाटक के अंत में राजा के विश्वासू मंत्री भी राजा का पक्ष छोडते नजर आते है अर्थात दलबदल की प्रवृत्ति नेताओं में बढ़ रही है इसका चित्रण प्रस्तुत नाटक में किया है।

3) विपक्ष दल के नेताओं की विरोधी वृत्ति:-

संसदीय प्रजापत्र में राजनीतिक दल व्यवस्था एक आवश्यक भाग होती है। इस व्यवस्था में जिस राजनीतिक दल को बहुमत प्राप्त होता है यह सरकार बनाता है और शासन की बागडोर संभालता है। सामान्यतः जो दल मंत्रीमंडल बनाता है, उसे सत्ता पक्ष और बाकी अन्य दल विपक्ष कहलाते है।मंत्रिमंडल को कार्यपालिका और संसद को विधायिका कहा जाता है| कार्य पालिका के कार्य पर निगाह रखने हेतु विपक्ष की महत्ता अहम होती है। अर्थात विपक्ष दल के सदस्य सरकार के कामों के विरुद्ध खुलकर आवाज उड़ाते है। विपक्ष दल के रूप में विरोध का दर्शन राजनीति में हमेशा होता है। इस वृति पर भी ज्ञानदेव अग्नहोत्री ने प्रकाश डाला है। जैसे "नहीं, महाराज, विरोध का दर्शन अमर है। वह नहीं तो कोई और उत्तराधिकारी में विरोध पाता रहेगा, राजमहल के सामने प्रदर्शन होतें रहेंगे और एक दिन इतिहास बदल जायेगा|"[7]

4) प्रशासन की भ्रष्ट वृत्ति :

आज देश में भ्रष्टाचार की जड़े इतनी मजबूत हो चुकी है कि इसे उखाड़नेवाला स्वयं ही उखड़ जाए, पर भ्रष्टाचार को समूल रूप से उखाड पाना असंभव तो नहीं, पर कठिन अवश्य है| प्रशासन व्यवस्था का शायद ही कोई ऐसा कोना बचा हो, जहां भ्रष्टचार रूपि जीवाणु न पाए गये हो| इसका प्रमुख कारणहै, स्वयं प्रशासन ही भ्रष्ट है| स्वयं प्रशासन अपना स्वार्थ पूरा करने के पिछे लगे है| जिससे उन्हें भ्रष्ट आचरण का सहारा लेना पडता है| प्रशासकों के ऐसे भ्रष्ट आचरण पर प्रकाश 'ज्ञानदेव अग्निहोत्री' ने अपने 'शुतुरमृर्ग' नाटक में डाला है|

'शुतुरमुर्ग' नाटक का राजा राष्ट्रीय प्रतिक के रूप में शुतुरमुर्ग की प्रतिमा की स्थापना करना चाहता है। आज उसका शुतुरमुर्ग पूरा होने जा रहा है। राजा ने इसके लिए सारा धन सरकारी खजाने से ही इस्तेमाल किया है। परिणाम स्वरप शुतुरनगरी के जनता की हालत बेहाल है। जनता की अन्न, वस्त्र की जरूरतें पूरी नहीं हो रही। लोग भूख से मर रहे है। जनता की समस्या को लेकर प्रथम विरोधीलाल और दूसरी बार मामूलीराम राजा के पास जाते है। राजा उन दोनों को लालच दिखाकर अपने पक्ष में लेता है। वे दोनों भी जनता की समस्याएँ भूलकर राजा के पक्ष में बते जाते है। कारण राजा ने विरोधीलाल को समझा था "आप मामूलीराम से स्पष्ट कह दे कि बिना शक्ति के देश की सेवा नहीं हो सकती और बिना पद के शक्ति नहीं मिल सकती - इसीलिए आपने शुतुरनगरी के विकासमंत्री का पद स्वीकार कर लिया है|"[8]

5) पलायनवादी वृत्ति :

आज के वर्तमान नेताओं में पलायनवादी वृति अधिक मात्रा में बढ़ गयी है। उन्हें तो केवल अपने समस्याओं की पड़ी रहती है। जनता की समस्याओं से उनका कोई लेनदेन नहीं रहता है। जब भी जनता की समस्या उनके सम्मुख उपस्थित होती है-, तब उन समस्याओं स ही अन्य समस्याएँ उपस्थित की जाती है। जिससे मुख्य समस्या दूर ही चली जाती है। अर्थात वे कभी भी इन समस्याओं का समाधान नहीं खोज पाते। नेताओं की इसी वृति पर भी 'ज्ञानदेव अग्निहोत्री' ने प्रकाश डाला है|

प्रस्तुत नाटक में भीड़ का नेता बनकर विरोधीलाल रोटी, कपडा और मकान के लिए राजा से बाते करने के लिए जाता है, तो राजा विरोधी लाल को विकासमंत्री बनवाकर भीड को उनकी समस्याओं के साथ छोड देता है। आगे मामूलीराम को भी खरीदना चाहता है| इसप्रकार शुतुरमुर्ग का राजा हर बार नयी- नयी बातों को उठाकर, नेताओं को खरीदकर, कभी नेताओं को धमाकाकर, भूख की समस्या का समाधा न नहीं करता परिमाण स्वरूप दस नागरिक राजमहल के सामने भूख बलि हो जाते है। उसे भी राजा साबित करना चाहता है। राजा इ आत्महत्यासके लिए भूख की परिभाषा ही बदल देता, "हां भाषणमंत्री! भूख अब एक शारीरिक स्थिति नहीं बल्कि मनःस्थिति मानी जाएगी। पेट में भूख लगकर मरने का राज्य जिम्मेदार है परंतु मस्तिष्क में भूख लगने का नहीं|

और चूंकि हमारी घोषणा के अनुसार भूख सिर्फ मस्तिष्क को लग सकती है| अतः नयी परिभाषा के अनुसार सदैव के लिए भूख समस्या का अंत|"[9] इसप्रकार एक समस्या से दूसरी समस्या निर्माण कर जनता को केवल बगावत के लिए भडकाकर नेता उन समस्याओं से दूर ही रहते हैं।

निष्कर्षतः कह सकते है कि ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने वर्तमान राजनीति तथा राजनीतिक लोगों के वृत्ति पर सुंदर ढंग से प्रकाश डाला है। नेताओं में बढ़ रही सत्तालोलुपता, दलबदलु वृत्ति, विरोधी भाव, पलायनवादी वृत्ति, भ्रष्ट वृत्ति आदि पर लेखनी चलाकर जनता को सचेत करने का प्रयास किया है| नेताओं की इन वृत्तिओं के कारण ही आम जनता की समस्याएं केवल समस्याएं ही रहती है| उनका कभी भी समाधान नहीं निकाला जाता अर्थात इन राजनीतिक नेताओं के भ्रष्ट आचरण के ही कारण आम जनता आज भी अनेक समस्याओं का सामना कर रहीं है। इस बात की और 'ज्ञानदेव अग्निहोत्री' ने ध्यान आकर्षित किया है।

संदर्भ सूची :-

1) बापूराव देसाई - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 140
2) डॉ. राजेन्द्रकुमार - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में ग्राम्य जीवन और संस्कृति, पृ. 134
3) ज्ञानदेव अग्निहोत्री - शुतुरमुर्ग, पृ. 69
4) वही, पृ. 56
5) डॉ. हरिशंकर दुबे- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य में व्यंग्य , पृ. 125
6) ज्ञानदेव अग्निहोत्री - शुतुरमुर्ग, पृ. 37
7) वही, पृ. 20
8) वही, पृ. 31
9) वही, पृ. 58